लेख

देवी-स्त्री यौनिकता

अनामिका

यौनिकता सर्जनात्मकता का उत्स है और उसका उत्सव भी। स्त्रियों की यौन-तंत्रियां सारे शरीर में बिखरी होती हैं, पुरुषों की एकाग्र। इसका अर्थ यह नहीं लगाया जा सकता कि स्त्रियां अधिक यौनकातर/यौनलोलुप/यौनसंवेदी होती हैं। इसका अर्थ यह भी नहीं लगाया जा सकता कि उनकी यौनिकता बिखरी हुई व कमतर होती है। यह एक प्राकृतिक संयोग है और किसी भी प्राकृतिक संयोग पर इठलाना या लजाना कहीं से भी युक्तिसंगत नहीं होता। पर यह स्त्री जीवन का एक बड़ा सत्य है कि स्त्रियों को यौन संतुष्टि ऐसे ही साथी से मिल सकती है जिसका उनसे गहरा मानसिक और बौद्धिक जुड़ाव हो चुका हो और जो मन-वचन-कर्म से सभ्य और शिष्ट हो। मां-बाप की तय की हुई शादियां वैदिक समागम को अंतरंगता का माध्यम मानती हैं। कभी-कभी यह तुक्का चल भी जाता है— हज़ार में से ऐसा भी हो सकता है जहां देह की वीणा ही ऐसी कुशलता से छेड़ी गई कि आलाप से तान तक एक पूरा 'खयाल' बन गया। लेकिन हज़ार में एक भी संख्या बड़ी तो नहीं है, ज़्यादातर तो 'गरजत-बरसत सावन आयो रे' का आक्रमणकारी दृश्य ऐसी भाव शून्यता के साथ हड़बड़-धड़बड़ में मंचित होता है कि स्त्री के स्नायु-तंत्र खुल ही नहीं पाते और पुरुष के खर्राटे गूंजने लगते हैं। दिन भर गाली-गलौज रात को खर्राटा—ज़्यादातर स्त्रियों के यौन-जीवन का हासिल यही है।

देव-देवियों की जो निर्मितियां हैं वहां यौन-जीवन तृप्त है। शायद इसलिए भी कि प्रायः वहां 'पहल' स्त्रियों/देवियों की तरफ से ही हुई है। शंकर सेलिब्रेटी हैं, देवादिदेव, पार्वती को उनका यश और बमभोलापन आकर्षित करता है। वे वन में तपस्या करती हैं और उनका ध्यान अपनी ओर खींचती हैं। 'हड़तालिका व्रत कथा' और कालिदास के 'कुमारसंभव' में पार्वती की यौनिकता का बेहद सुकुमार और सजीव चित्रण हुआ है। लोक कथाओं में भी शिव-पार्वती के सरस और परम विटी संवाद देखने में आते है।

'राधा' और गोपियों की जटिल और गम्भीर यौनिकता के अत्यन्त प्रखर चित्र विद्यापति, सूरदास आदि में मिलते हैं। एक प्रसंग में मैले वस्त्र पहने राधा चटाई पर एक ओर मुंह फेरे लेटी हुई है। सखियों के कहने पर भी वह साड़ी नहीं बदलती। विद्यापति कहते हैं— *हरिश्रम जल भींजत उरअंचल, एहि मारत व धुआवति सारी* (यह साड़ी मैं कैसे धो दूं या बदल भी कैसे लूं, कृष्ण ने मेरे साथ समागम किया था, यौनश्रम से जो पसीना टपका था, उससे मेरा आंचल भीगा था। कृष्ण का पसीना जिस आंचल में सूखा है, वह साड़ी धोने की धृष्टता मैं नहीं करने वाली)।

प्रेम का ऐसा वर्णन जहां शास्त्रों में हुआ हो— वह भी आदर्श स्त्री-चरित्रों के माध्यम से, उस समाज में भी क्रूर, वहशी, लोभी पति के प्रति भी समर्पण की उम्मीद स्त्रियों के लिए की गई और पति के अलावा किसी से भी हंसने-बोलने का रिश्ता रखने वाली स्त्री कुलटा कहलाई। आदर्श स्थिति तो पति-पत्नी दोनों के लिए एक-निष्ठता ही है क्योंकि इससे रिश्ते में बिखराव नहीं आता। किसी को 'अनचाहा' 'उपेक्षित' होने की दुर्गति नहीं झेलनी पड़ती। पर कभी किसी बौद्धिक-मानसिक या शारीरिक खता के चलते कहीं और भी सखा-भाव स्थापित हो जाना असम्भव नहीं है। ऐसे में सौत से जैसे स्त्रियां समंजन का रिश्ता रख लेती थीं, पुरुष भी सह-पति या सह-सखा का रिश्ता रख सकते हैं। इसका एक उदाहरण पांचाली के पांच पति-पाण्डव हैं। महाभारत में

तो खैर प्रायः सारी स्त्रियां निष्ठता के आर्दश का बहिष्कार करती हैं। स्वतंत्रता की एक अजीब संकल्पना नियोग विधि से पुत्र प्राप्त करने की इच्छा और स्वयंवर में मनचीते पुरुष के चयन में दिखती हैं। सत्यवती, अम्बा-अम्बालिका-कुन्ती से लेकर द्रौपदी तक यौनेच्छा के विनियोग में पूर्णतः स्वतंत्र तो नहीं हैं— वर्ग-वर्ण के घेरे में बंधी हुई हैं। पिता द्वारा चुने वरों में ही एक को चुनती है या फिर देवताओं में एक— सूर्य को।

तुलसीदास ने 'पुष्प वाटिका प्रसंग' में 'नूपुर-किंकिणि-ध्वनि' तक सीता की शर्मीली यौनिकता की रूनझुन दिखाई है। स्वयंवर के समय में भी वे थोड़ी बेचैन होती हैं कि धुनष न उठा तो क्या होगा। बाकी उनकी मधुर रूमानियत का विस्तार जंगलों में साथ जाने या स्वर्ग-मृग के लिए मचलने में दिखाई देता है। एक बात ध्यान देने की यह है कि सांद्र यौन-चेतना के बावजूद उच्छृंखन यौनिकता की शिकार देवियां भी नहीं हैं। 'जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया' का भाव उनमें नहीं है तो 'जो भी प्यार से मिला, हम उसी के हो लिए' वाली डांवाडोल यौनिकता भी किसी में नहीं दिखती।

करुणा या भय या मात्र संकोच के वश में वे आत्मसमर्पण नहीं करतीं। लालच या फायदे से परिचालित होने का भी प्रश्न नहीं उठता। क्योंकि वे अपनी यौनिकता को, अपने चयन को, अपनी देह, अपनी रूचि को महत्व देती है। वैसे भी जिसे धैर्यवान, कोमल, मनमोहना नायक मिला है— वे उदंड की ओर कैसे आकर्षित होंगी? स्वाभाविक है कि सीता रावण की ओर आकर्षित नहीं होगी। ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह कि रावण से ब्याही मंदोदरी के पास यदि राम आते तो उसका मन विचलित होता कि नहीं?

हमारे समाज की मुश्किल यह है कि यह ऐसे उद्धत पुरुषों का समाज है जो रावण की तरह धीर-गम्भीर भी नहीं। काम-क्रोध-लोभ से भरे पुरुषों से प्रेम कर पाना किसी उन्नत चेतना सम्पन्न स्त्री की यौनिकता के लिए एक कठिन चुनौती है। ज़िद्दी या अविकसित बच्चा समझकर पुरुष से सद्भाव बनाए रखने की कोशिश की जा सकती है, पर प्रखर प्रेम कर पाना किसी भी स्त्री के लिए असम्भव ही जानिए। हरहर-पटपट से अब तक भी कई दफा स्त्री शरीर दूसरे स्त्री शरीर में सुख के झरने ढूंढने लगता है।

बहुतेरे पुरुषों को स्त्री यौनिकता की समझ होती भी नहीं— न वे आदरपूर्वक मीठी, उड़ान भरी बातें कर पाते हैं न काव्य-संगीत-नृत्यादि की समझ ही (शिव या कृष्ण की तरह) उन्हें होती है— 'भाव न जाने पेट भरे से काम' वाली यांत्रिकता झेल पाना किसी भी संवेदनशील स्त्री शरीर के लिए जीती मक्खी निगल जाने जैसा ही होता है। आंख-नाक-कान मूंदकर वे किसी तरह तीन मिनट की रगड़घस सह जाती हैं। फिर बाथरूम में जाकर उल्टी कर देना 'फ़ेकिंग' के बाद की थकान लम्बे, अश्रुविह्वल स्नान में धोना, कहीं किसी गाने या और किसी काम में मन बहला लेना स्त्री जीवन के आम अनुभव है। आर्थिक निर्भरता बच्चों की चिंता, बूढ़े मां-बाप के बिखरने का भय आदि संदर्भ उनकी यौनिकता का दमन करते चलते हैं।

कृष्ण और शिव में आदर्श प्रेमी के सारे लक्षण तो हैं ही। कालिदास के 'रघुवंशम' के राम में सजग प्रेमी के लक्षण भी हैं जिससे सीता की यौनिकता स्पन्दित होती है। लंका से लौटते हुए राम सीता को जंगल-समुद्रादि दिखाते हैं कि देखो, वहां जंगल में मुझे तुम्हारा नूपुर मिला था। उससे मैंने तुम्हारा पता कितनी बेचैनी से पूछा और देखो वह समुद्र जहां नदियां सागर को स्वयं अपना मुख अर्पित करती हैं। लेकिन सागर भी दान नहीं लेता, अनन्त लहरों, में यह अर्पण लौटाता है।

शिव एक आदर्श प्रेमी इसलिए भी है कि वे अत्यन्त सरस कहानियां सुनाते हैं, सृष्टि का रहस्य समझाते हैं। उपेदश सुनते भी है, रूठी हुई प्रिया को मनुहार से मना लेते हैं और प्रिया के वियोग में उन्मत्त होकर (उनका शव कंधे पर लिए-दिए) सारी कायनात में अपने प्रेम की डुगडुगी बजा देने का महानाट्य भी रचते हैं।

दस महाविद्याएं शिव के दस अलग-अलग रूपों से अनुरक्त हैं— काली महाकाल से, ललिता कामेश्वर से, बगला मृत्युञ्जय से ...। विपरीत रति की बहुतेरी तांत्रिक मुद्राएं इस रूपक का विस्तार करती हैं कि शक्ति के संचार के बिना शिव भी शव है। पुरुष के व्यक्तित्व के दस आयाम, शिव में दस रूपों में स्त्री व्यक्तित्व के दस पक्ष दस महाविद्याओं में बसी है। कहने का अर्थ यह है कि खिलने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों का व्यक्तित्व बहुआयामी और एक-दूसरे को मीठी चुनौती दिए रखने वाली सरस पारस्परिकता से युक्त होना चाहिए ताकि 'तुमसे न सहज मन ऊब जाए।'